सर्पदंश से होने वाले मृत्युदर को शून्य करने के लक्ष्य से
आम आदमी के लिए

जेब में सांप

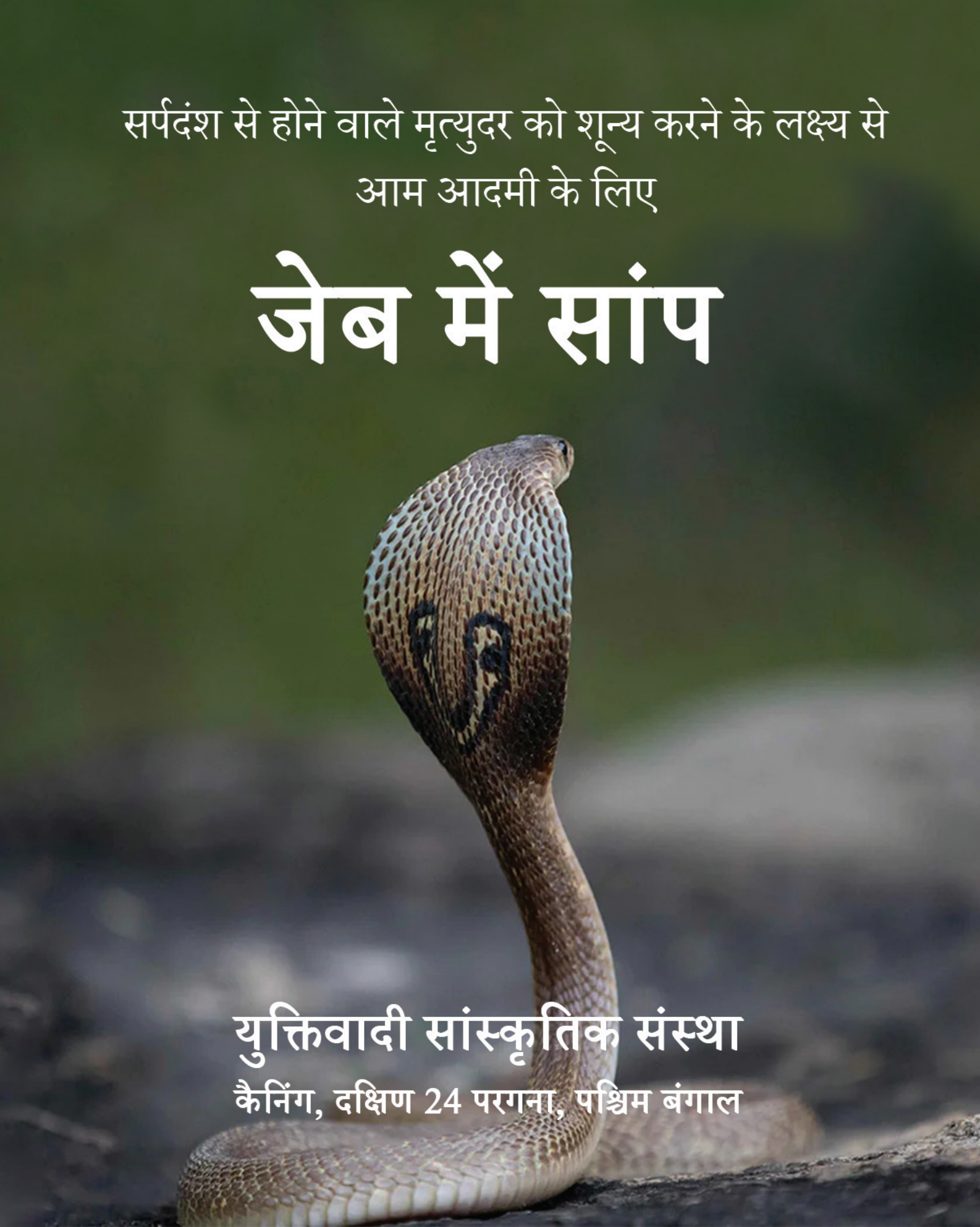

युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था
कैनिंग, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल

JSSC द्वारा प्रकाशित कुछ अन्य पुस्तक/मानचित्रों

पुस्तक

1. जेब में साँप, प्रथम हिन्दी संस्करण, 2023
2. पाकेट में साँप, प्रथम बंगला संस्करण, 2021
3. सर्पदंश सहायतार्थ हेल्पलाइन प्रतिवेदन, 2020
4. सर्पदंश हेल्पलाइन पुस्तिका, (एन आर एच एम द्वारा प्रायोजित), 2010
5. सर्प, सर्पदंश, एवम उपचार, (दक्षिण 24 परगना में किया गया एक विस्तृत और श्रमसाध्य सर्वेक्षण: 2008-2012), 2015
   (i) बंगला संस्करण (212 पेज)
   (ii) अंग्रेजी संस्करण (244 पेज)
6. पश्चिम बंगाल के सांप (अंग्रेजी संस्करण - 125 पेज), 2005
7. पश्चिम बंगाल के सांप (बंगला संस्करण - 34 पेज), 1995
8. सांपों पर विभिन्न लघु पुस्तिका (बंगला संस्करण), 1989-98

विभिन्न महत्वपूर्ण मानचित्रों की श्रृखंला

दिवाल में टांगने के लिए उपयुक्त (2' x 3')

1. सर्पदंश और अन्य जीव-जन्तु के दंश की पहचान/शिनाख्त (बंगला संस्करण), 2018 (अंग्रेजी संस्करण), 2023
2. भारत के सांप (अंग्रेजी संस्करण), 2012
3. पश्चिम बंगाल के सांपों का मानचित्र (बंगला संस्करण), 2008
4. 24 परगना के साँपों का मानचित्र (बंगला संस्करण), 2002
5. बंगाल के सांप, (बंगला संस्करण), 2000

सर्पदंश से होने वाले मृत्युदर को शून्य करने के लक्ष्य से
- आम आदमी के लिए

जेब में सांप

बिजन भट्टाचार्य

संपादक : ड. दिलीप कुमार सोम, संजय बनर्जी
सहायक संपादक : सुभेंदु गांगुली

युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था
कैनिंग, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल, भारत
www.jss-canning.org
हेल्पलाइन : 91-96359-95476, 91-89679-39564

जेब में सांप

Jeb mein Saap

सर्वाधिकार : युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था, कैनिंग
प्रथम प्रकाशन : मार्च 2023

प्रकाशक : युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था
कैनिंग, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल, भारत
हेल्पलाइन : 96359-95476, 89679-39564, 97338-22825

निर्माण कार्य सहयोग : शाहजहाँ सिराज, अमित विश्वास,
अभिजीत बनर्जी
कृतज्ञता स्वीकार : ड. निर्मलेंदु नाथ, प्रोफ़ेसर (डॉ) तापस भट्टाचार्य,
डॉ रथीन्द्रनाथ हालदार, डॉ चंद्रनाथ दासगुप्ता, निरजंन सरदार, बिमल मंडल

संदर्भ सूत्र : सांप, दंश एवं चिकित्सा
(संपादन : डॉ बासुदेव मुखोपाध्याय, ड. दिलीप कुमार सोम)
अलंकरण और मुद्रण : एस पी कम्यूनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड
31 बी, राजा दिनेंद्र स्ट्रीट, कोलकाता 700 009
मूल्य : ₹ 35

विषय सूची

प्राथमिक बातें 5
विशेषज्ञों के संदेश 6
सांप के काटने से कितने लोग मारे जाते है ! 14
पृथ्वी पर सांपों का आगमन 15
सांपों का वर्गीय (order) स्थान 15
सांपों का परिवार 16
सांपों के प्रकार एवम उनका वास स्थान 17
दंत कथाओं में सांप 20
मिमिक्री या सदृश सांप 25
वे जो हमें मौत के सामने लाकर खड़ा करते हैं 27
सांप किस समय काटते हैं 27
दंश का निशान 35
संक्षेप में याद रखना होगा- 'RIGHT' (राईट) 37
चिकित्सा संबंधी भ्रांतिमय धारणा 38
कहां पर चिकित्सा 39
अस्पताल में चिकित्सा 40
सांप और अन्य जीवों का दंश 42
सांप डसने की घटना कम होगी यदि 43
सांपों से दोस्ती करनी होगी 44

सोचिए तो सांप हमारे करीबी और उपकारी मित्र हैं 45
मृत्यु पर अनुदान 46
सांपों का वितरण 47

सांप ने काटा है ?

1. बंद कीजिए **FM** – (**F**ear and **M**ovement) डर और चलना - फिरना।

2. चालू करे **FMH** – (**F**ast **M**ove to **H**ospital) जल्द चलिए अस्पताल की ओर।

No (FM)	**Yes (FMH)**
Fear & **M**ovement	**F**ast **M**ove to **H**ospital

प्राथमिक बातें

सरीसृप वर्ग का एक ऐसा जीव, जिसकी नाख़ून नहीं होते, जिसकी दृष्टिशक्ति अत्यंत कमजोर है, जो केबल एकमात्र फैंफड़ा होने की कारन तेज़ गति से चल या दौड़ नहीं सकता, शरीर में घर्मग्रंथी न होने के कारण अतिरिक्त गर्मी या शीत में इसकी मौत भी हो जाती है, उन्नत मस्तिष्क न होने के कारण स्वभाविक बुद्धि से वंचित यह सोच भी नहीं पाता कि अगले पल क्या होगा? इतनी सारी कमियों के बावजूद यह जीव ने इस धरती पर छः से आठ करोड़ वर्षों से अपना अस्तित्व कायम कर रखा है। प्रकृति में इस अजीबोगरीब से प्राणी का नाम है – सांप।

इस जीव का नाम सुनते ही मन में श्रद्धामिश्रित भय, कौतुहल से लेकर मृत्यु की आशंका उत्पन्न हो जाती है। इसे देखने मात्र से जो पहली प्रतिक्रिया होती है कि – मारों ! मारडालो इसे ! विश्व के कई जगहों पर इन्हें पाला जाता है, इसके मांस को सुस्वादु भोजन के रूप में परोसा जाता है, खेल दिखाए जाते हैं। कई देशों में सांप शौर्य-वीरता का परिचायक है। सच पूंछे तो यह जीव हमारा छिपा हुआ दोस्त है। पाठ्य- पुस्तकों में सविस्तार वर्णन नहीं होने के कारण बचपन मे दादी – नानी से सुनी कहानियां ही इस जीव के विषय में हमारा मार्गदर्शन करती है और अक्सर हम मान लेते हैं कि साँप हमारा शत्रु ही है। सभी तक सटीक जानकारी पहुंचाने के उद्देश्य से 'जेब में सांप' लघु पुस्तिका का लोकार्पण करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। उम्मीद है आने वाले दिनों में सर्पदंश और असामयिक मृत्य के रोकथाम में यह पुस्तिका अग्रणी भूमिका निभाएगी।

विशेषज्ञों के संदेश

जेएसएससी तथा इस पुस्तिका और सर्पदंश के कार्यक्षेत्र से जुड़े कुछ विशिष्ट जनों के लिए कुछ शब्द जो जेएसएससी के वर्षों के संगी है।

अजय कुमार दास, आई एफ एस
मुख्य वन संरक्षक और क्षेत्र निदेशक
सुंदरवन टाइगर रिज़र्व
कैनिंग टाउन, 24 परगना (द.) प. ब. 743329
Das.ajoykumar@yahoo.co.in • + 91 94341 76535

मैं यह जानकर खुश हूं कि युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था, कैनिंग (जेएसएससी) सांप और सर्पदंश पर हिंदी में एक पॉकेट-साइज़ पुस्तिका प्रकाशित करने जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) ने घोषित किया कि सांप का काटना सबसे उपेक्षित रोगों में से एक है। दुनिया भर में हर साल हो रहे मौत के अलावा भारतवर्ष मे सर्पदंश से होने वाली सर्वाधिक मृत्यु का सिलसिला आज भी जारी है।

पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत से प्रजाति के सांप पाए जाते है, और इन ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत से लोग जोखिम उठा के कच्चे घरों में रहते हैं। इसके अलावा, आम लोगों के बीच गलत धारणाएं भी सर्पदंश पीड़ितों

को पारंपरिक वैद्यों की दया पर छोड़ देते हैं, जिससे रुग्णता एवं मृत्यु दर का आंकडा बढ़ जाता है।

ऐसे वक्त पर, यह पुस्तक विभिन्न सांपों, उनके आवास स्थल एवं सर्पदंश पीड़ितों के लिए प्रारंभिक उपचार कैसे करें, इस पर लोगों को एक अवधारणा देगी।

मैं लेखकों को इस किताब के जरिए उनके प्रयास के लिए तथा इस महत्वपूर्ण प्रकाशन के लिए उन्हें बधाई एवं धन्यवाद देता हूं।

डॉ दीपंकर माजी

स्वास्थ्य सेवा के संयुक्त निदेशक (पीएच एंव सीडी)

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार

ddhsphwb2017@gmail.com • +91 98360 46212

सर्पदंश के कारण मृत्यु दर में कमी इलाज के मांग और आपूर्ति के उचित तालमेल पर निर्भर करती है जहाँ एक ओर है उचित इलाज की उपलब्धता एंव दूसरी ओर इलाज के लिए लाभ उठाने की मांग और जागरूकता।

हालांकि, सांप हमारे पारिस्थितिक तंत्र का सक्रिय हिस्सा है। इसलिए चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए सांप के बारे में समग्र सार्वजनिक ज्ञान आवश्यक है।

युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था (जेएसएससी), कैनिंग, पश्चिम बंगाल इस क्षेत्र में दशकों से जन जागरूकता उत्पन्न कराने में बहुत अच्छा काम कर रहा

सांप के काटने से कितने लोग मारे जाते है !

हमारे बंगाल में नदी, नाले, और जंगल अधिक होने के कारण सांपों की संख्या भी अधिक है। इसलिए सर्पदंश और मृत्यु भी अधिक है। सर्पदंश से होनेवाली मृत्यु के सटीक आंकडे कहीं नहीं मिलते। कहा जाता है भारतवर्ष में हर वर्ष 45 से 50 हजार लोग सर्पदंश के कारन मरे जाते हैं। पश्चिम बंगाल में प्रत्येक वर्ष 6-8 हजार लोग मरते हैं। दक्षिण 24 परगना जिला क्षेत्र में सर्पदंश से जुड़े मृत्युदर का एक सटीक आंकड़ा उपलब्ध है। इस जिले में "युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था" नामक एक वैज्ञानिक संगठन, के सदस्यों ने दक्षिण 24 परगना के 27 ब्लॉकों से घर-घर जाकर सर्प विषयक तथ्य जुटाए, यह सर्वेक्षण 2008-2012 वर्ष तक चला।

तीन वर्षों (2009–2011) में सांप काटने से 535 लोगो की जान चली गई। इनमें से 65.60 प्रतिशत लोग जून से सितम्बर महीने के बीच मारे गए और 535 में से 290 मृत्यु करैत साँप के काटने से हुई। 77 लोग लगभग 10 से 14 वर्ष की उम्र के थे और 75 लोग 15 से 19 वर्ष के थे। इनमें से 70 प्रतिशत मृत्यु तांत्रिक और ओझा के संपर्क/ अवैज्ञानिक इलाज से हुई। इन आंकड़ों से पता चलता है कि साँप काटने से अधिकांशतः बच्चे और कम उम्र के लोग मारे जाते हैं।

सर्पदंश से अकाल मृत्यु होना एक सामाजिक क्षति है। जबकि साँप काटने से किसी भी व्यक्ति की जान नहीं जानी चाहिए। ऑस्ट्रेलिया में बहुत से जहरीला सांपों का वास है। लेकिन इस देश में एक व्यक्ति की भी मौत सांप के काटने से नहीं होती। अगर होती भी है, तो वह घटना अखबार में प्रकाशित होती है। उस

देश की व्यवस्था इतनी ही उन्नत है। इसलिए थोड़ी सावधानी और सटीक समय पर इलाज होने से सर्पदंश की वजह से हुए मृत्यु को शून्य पर लाया जा सकता है।

हमारे देश में साँप का काटना ' जन स्वास्थ्य समस्या' के रूप में नहीं देखा जाता, जबकि सरकारी और गैरसरकारी स्तरों को एकसाथ काम करने की जरूरत है।

पृथ्वी पर सांपों का आगमन

पृथ्वी की सृष्टि आज से 450 करोड़ वर्ष पहले हुई। एककोशि जीवों का जन्म 350 करोड़ वर्ष पहले हुआ। 30 करोड़ वर्ष पहले उभयचर प्राणी आए। इन उभयचरों का एक दल समय परिवर्तन की धारा में बहकर सरीसृप बन गए जो पेट के बल चलते हैं।

समय परिवर्तन के विकास में जब सरीसृप स्तनपायी जीव में विकसित हो रहे थे उस दौरान सरीसृपों का एक हिस्सा साँप में रूपांतरित हुआ। साँपो का आगमन 12.5 करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर हुआ।

सांपों का वर्गीय (order) स्थान

वर्तमान समय में पृथ्वी पर हम प्राणियों को 4 वर्गों में बिभाजित करते है। जिसमें से चतुर्थ वर्ग है - स्कोयामाटा। इस वर्ग का द्वितीय उपवर्ग ऑफिडिया है जो सांपों की श्रेणी है।

कछुआ, मगरमच्छ, घड़ियाल, छिपकली, गिरगिट-ये सभी सांपों के समगोत्र हैं। यद्यपि इन सभी सरीसृपों के पैर होते हैं किंतु सांप के नहीं। पृथ्वी पर 6000 सरीसृपों की प्रजातियाँ हैं, जिसमें से सांपों की प्रजाति 3000 है।

सांपों का परिवार

दुनिया में सांपों के 20 से ज्यादा परिवार हैं। हमारे भारत में केवल 7 या इतने ही सांप परिवार हैं। जिसमें से केवल 3 परिवार विषधर है - एलाफिडी (Elaphidae), वाईपेरिडी (Viperidae), हाइड्रोफिडी (Hydrophidae)।

	परिवार (Family)	**सांपों के नाम**
1	टाईफ्लोपिडी (Typhlopidae)	अंधा सांप
2	बोइडी (Boidae)	लाल सैंड बोआ, ह्विटेकर बोआ, बलुआही बोआ
3	पाईथोनिडी (Pythonidae)	पाईथन या अजगर
4	कोलूब्रिडी (Colubridae)	धामन, धूरनागिन, सीतालट, बंधी कुकरी, साखड़, जलसर्प, ताम्र पीठ सांप, कालनागिनी, मांजरा, बेल सांप, जैतूनी डोरिया, रजतबंसी, हरा ढोरिया, कौंडारूस सैंड बोआ सांप, वन सुंदरी

5	एलापिडी (Elapidae)	नागराज, नाग, गेंहुअन, करैत, अहिराज, पतला मूंगा सांप
6	वाईपेरिडी (Viperidae)	दबोईया/कोढिया, पिट वाइपर, फुर्सा
7	हाइड्रोफिडी (Hydrophidae)	सामुद्रिक सांप

सांपों के प्रकार एवम उनका वास स्थान

सांप स्थल, जल और वृक्षों पर निवास करते हैं। पश्चिम बंगाल में प्रमुख रूप से प्रकार की प्रजातियाँ पाई जाती है।

स्थलीय : विषहीन 14, विषधर 8

जलीय : विषहीन 2, विषधर 1 (भारत के सभी समुद्री सांप विषधर होता है)

वृक्षावासी : विषहीन 4 विषधर 1

पेज 49 से शुरू होने वाले 30 साँपो के मनमोहन रंगीन चित्रों को देखिए।

काल्पनिक कहानियाँ और अफवाहें

1. सांप बांसुरी की धुन पर नाचते हैं : सांपों में कान नहीं होने के कारण वे वायु से टकराते शब्दों को सुन नहीं सकते किंतु धरती पर कंपन्न होने से त्वचा/शल्कों द्वारा महसूस करते हैं।

2. सांप एक आँख से देखते है : इनके आँखों की पुतली स्थिर होती है, इसलिए दोनो आँखों का इस्तेमाल करके और सिर घुमाकर किसी वस्तु को देखते हैं। आँखों के ऊपर शल्क का आवरण होने के कारण ये ठीक से देख नहीं पाते हैं। सांप थर्मल इमेज देखता है, जिसकी वजह से सांप स्थिर वस्तु नहीं देख सकता।

3. सांप पीछा करते हैं : ऐसा नहीं होता। सांप ठंडे खून का जीव है,बेहद कमजोर फेफड़े की वजह से ये तेजी से दौड़ नहीं सकते। 4-5 कि0 मी0 प्रति घंटा इनकी रफ्तार है । दुनिया में सबसे तेज रफ्तार का सांप हैं ब्लैक माम्बा, जो 10-14 किलोमीटर के गति से दौड़ सकता है। मगर एक मनुष्य के गति से इसकी तुलना नही हो सकती।

4. सांप बदला लेते हैं : सांप का मस्तिष्क मनुष्य की तरह उन्नत नहीं होने के कारण किसी व्यक्ति का चेहरा याद रखने की क्षमता इनमें नहीं होती। अगले पल क्या होगा यह अनुमान लगा पाना इनके लिए संभव नही है।

5. सांपों के सिर पर मणी होता है : यह एक प्रचलित धारणा है कि साँपो के मस्तक पर बहुमूल्य मणी विराजमान होता है। परन्तु यह प्रमाणित है कि यह तथ्य नहीं है। अक्सर सपेरे फन के पीछे के शल्कों को थोड़ा काटकर उसमें सजावटी मोती जैसी कोई वस्तु छिपा देते हैं। बाद मे चमड़े को फिर से काटकर

उसमें से मणी निकालने का अभिनय करते हैं। आमलोग यह सब देखकर भ्रमित हो जाते हैं।

6. दूध-केला खिलाकर सांप पालना : सांप पालतु प्राणी नहीं हैं। ये मांसाहारी जीव है इसलिए दूध, केला या आम इसका भोजन नहीं है। कमजोर फेफड़े और चीरा/फटा जीभ होने से यह गाय के थनों को चूसकर दूध नहीं पी सकते।

7. नाग और धामिन का शारीरिक मिलन : सांप अलग-अलग प्रजाति के होते हैं। प्रजनन काल मे केवल अपने प्रजाति में ही मिलन करते है। कभी-कभी अपना दबदबा दिखाने के लिए या इलाके पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए ये एक दूसरे को दबोचते या काटते हैं। परंतु हमेशा यह यौनमिलन नहीं होता है।

8. नेवला सांप की औषधि नहीं जानता : नेवले सांपों के विष के औषधि के बारे में जानते हैं, ऐसी धारणा है। बहुत से वैद्य ऐसी औषधीय जड़ीबूटी संग्रह करके सांप काटने का चिकित्सा करते हैं – ऐसा वृद्ध व्यक्तियों का मानना है। विशेषज्ञों ने नेवले के बारे में बहुत से परीक्षण-निरीक्षण किए हैं लेकिन अभी तक दुनिया में ऐसी कोई जड़ी-बूटी का आविष्कार नहीं हुआ जो खून में फैले विष को निष्क्रिय करने मे सक्षम हो। अभी तक केवल एकमात्र जीवनदायिनी दवा एंटीवेनम सिरम (AVS) ही आविष्कृत हुआ है- जो वैज्ञानिकों की देन है।

नेवला मांसाहारी जीव है। इसलिए सांप भी उसके भोजन तालिका में मौजूद है। सांप नेवला से लड़ाई करने में असमर्थ हो जाता है क्योंकि वह जल्द ही हाँफने लगता है (एक फेफड़े होने के कारण), इसके अलावा आँखों से ठीक देख नहीं सकता। नेवला स्वभाव से आक्रमणकारी और नुकीले दांत वाले होते हैं, इसलिए

दंश का निशान

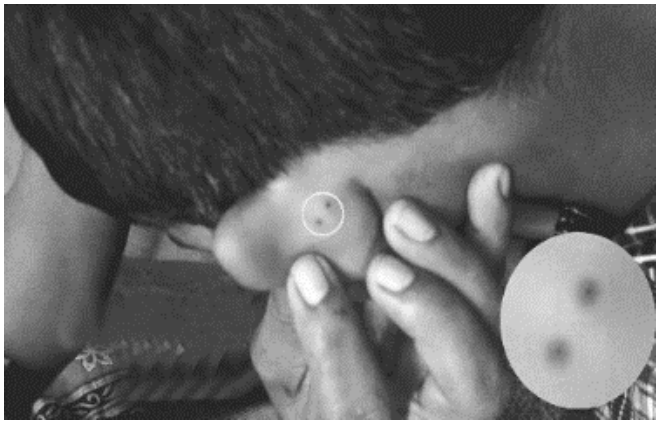

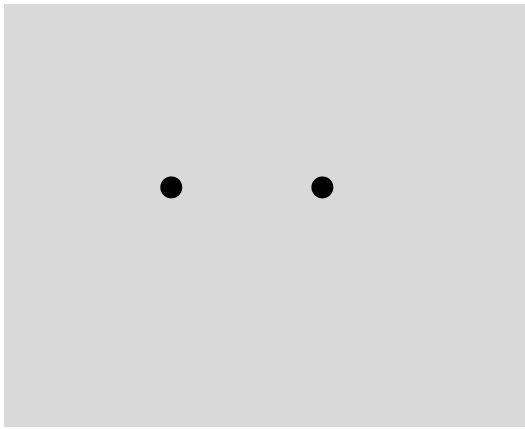

विषधर सांपों का दंश
(साधारणतः दो निशान दिखाई देते हैं)

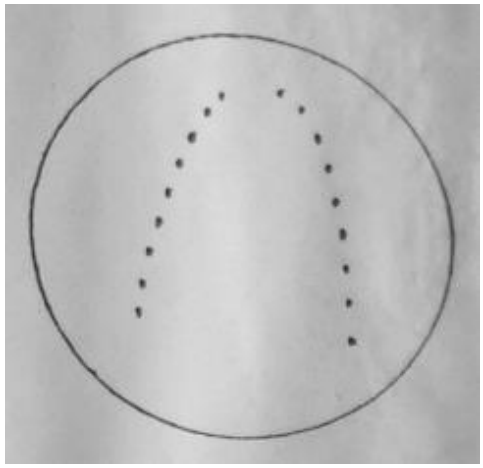

विषहीन सांपों का दंश
(साधारणतः अर्ध वृत्ताकार कई निशान दिखाई देते हैं)

विषधर

स्नायुकोषनाशकारी	रक्तकोषनाशकारी
(Neurotoxic)	(Haemotoxic)
करैत, नाग, गेहुअन	दबोईया, फुर्सा, पिट वाइपर
AVS	AVS
Atropine, Neostigmine	

10 भायल (एम्पूल) AVS देने के बाद चिकित्सा आरंभ होती है (विश्व स्वास्थ्य संगठन, WHO के दिशानिर्देश के अनुसार) बाद में चिकित्सक सटीक समय पर सटीक परिमाण में AVS देते रहेगें जबतक मरीज़ स्वस्थ ना हो जाए।

मत करो और करो

सांप और अन्य जीवों का दंश

(त्वरित निदान विधि)

दिन हो या रात, जीव दिखाई दे या ना दे, किसी भी जीव के काटने पर डरने के बजाय नीचे दिए गए 'आठ सूत्र'- को समझकर उसका पालन करें तो आप स्वयं इस निष्कर्ष पर पहुंच पाएंगे कि किस जीव ने काटा है?

आठ सूत्र

1. काटने का समय
2. किस स्थान पर काटा है
3. काटने का निशान
4. लक्षण
5. संभावित सांप
6. सांपों का विन्यास
7. अवलोकन का समय
8. दंश का चुनाव

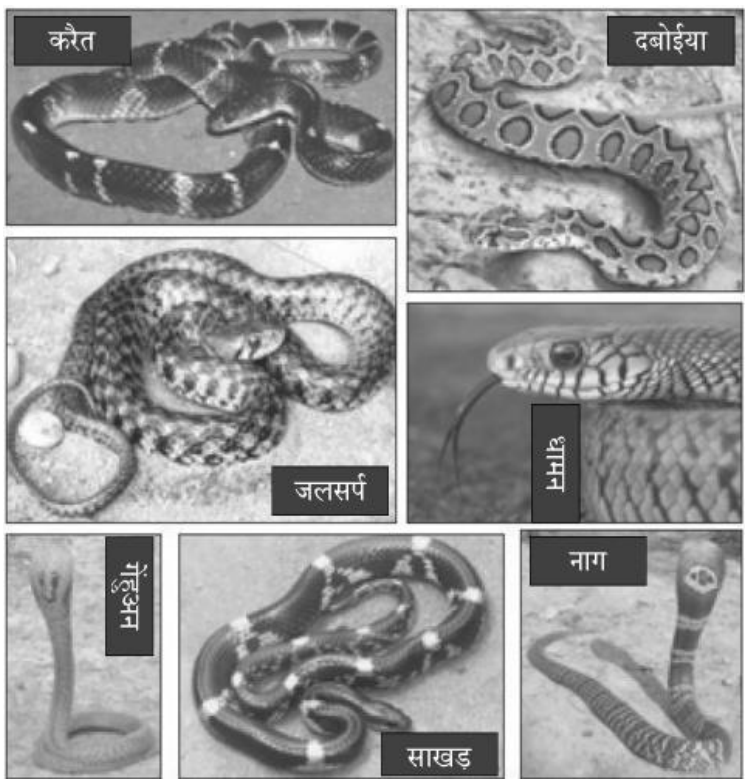

सूत्रों की व्याख्या

1. भौगोलिक स्थान- तालाब द्वार, घर में आदि (उल्लेखित है)
2. विषधर/विषहीन सांपों का दंश का निशान (उल्लेख है)

3. लक्षण (उल्लेखित है)
4. मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में 7 सांपों की काटने की घटना मिलती है, (विषधर) - करैत, नाग, गेहुअन, दबोईया (विषहीन) - धामन, साखड़, जलसर्प
5. चार विषधरों की उपस्थिति सब जगह एक समान नहीं है।

   गेहुअन, करैत - उत्तरबंगाल

   करैत, नाग - सुंदरवन अंचल (13 ब्लॉकों में)

   करैत, नाग, दबोईया - दक्षिण 24 परगना

   शेष जिलाओं में 4 विषधर दिखाई देते हैं
6. दंश या अवलोकन के समय लक्षण हो भी सकते हैं या नहीं भी हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में हालत कैसी है यह समझना संभव है।
7. दंश का चुनाव- प्रश्नों के उत्तर शीघ्र निर्णय लेने में मदद करेगें।

सांप डसने की घटना कम होगी यदि

1. बाग-बगीचा या जंगल-झाड़ी साफ करने के वक्त एक डंडे की मदद से स्थान को थोड़ा हिलाकर देख लेना चाहिए (सांप रहने पर भाग जाएगा)।
2. हमेशा याद रखना होगा कि यदि अंधकार हो कुछ भी दिखाई ना दे वहां हाथ या पैर ना बढ़ाए।
3. बिस्तर लगाते समय उसे झाड़े और मच्छरदानी का व्यवहार अवश्य करे (करैत के काटने की घटना नहीं होगी)।

4. घर या आस-पास चूहे का बिल दिखे तो बंद कर दीजिए।
5. प्रातः या संध्या काल में सतर्कता से चलने-फिरने की जरूरत है।
6. वर्षा ऋतु में घर के आसपास जंगल-झाड़ियों की सफाई करके ब्लीचिंग पाउडर छिड़क दें।
7. अचानक सांप दिख जाए तो हिले- डुले नहीं, स्थिर रहिए- सांप नहीं काटेंगे।
8. घर में कुत्ते या बिल्ली हो तो सांप आने की संभावना कम होती है।

सांपों से दोस्ती करनी होगी

1. सांप प्रत्येक वर्ष भारतवर्ष का एक चौथाई चूहों का खात्मा करता है।
2. एक दर्जन चूहा एक वर्ष में 888 चूहों को जन्म दे सकता है।
3. धामन या नाग एक महीने में 160 चूहे खाते हैं।
4. सांप की विषथैली वातावरण में मौजूद हानिकारक गैसों को अवशोषित कर लेती है।
5. AVS सांप के विष से ही बनती है।
6. दर्द की दवा 'कोब्राक्सिन' नाग के विष से बनती है।
7. सांप के विष से कैंसर के इलाज की खोज जारी है।
8. हम इस जीव को विलुप्त होने से बचाने में मदद करें।

प्रकृति के संतुलन में सांप की भूमिका

सांप जो जीव खाते हैं

जो जीव सांप को खाते हैं

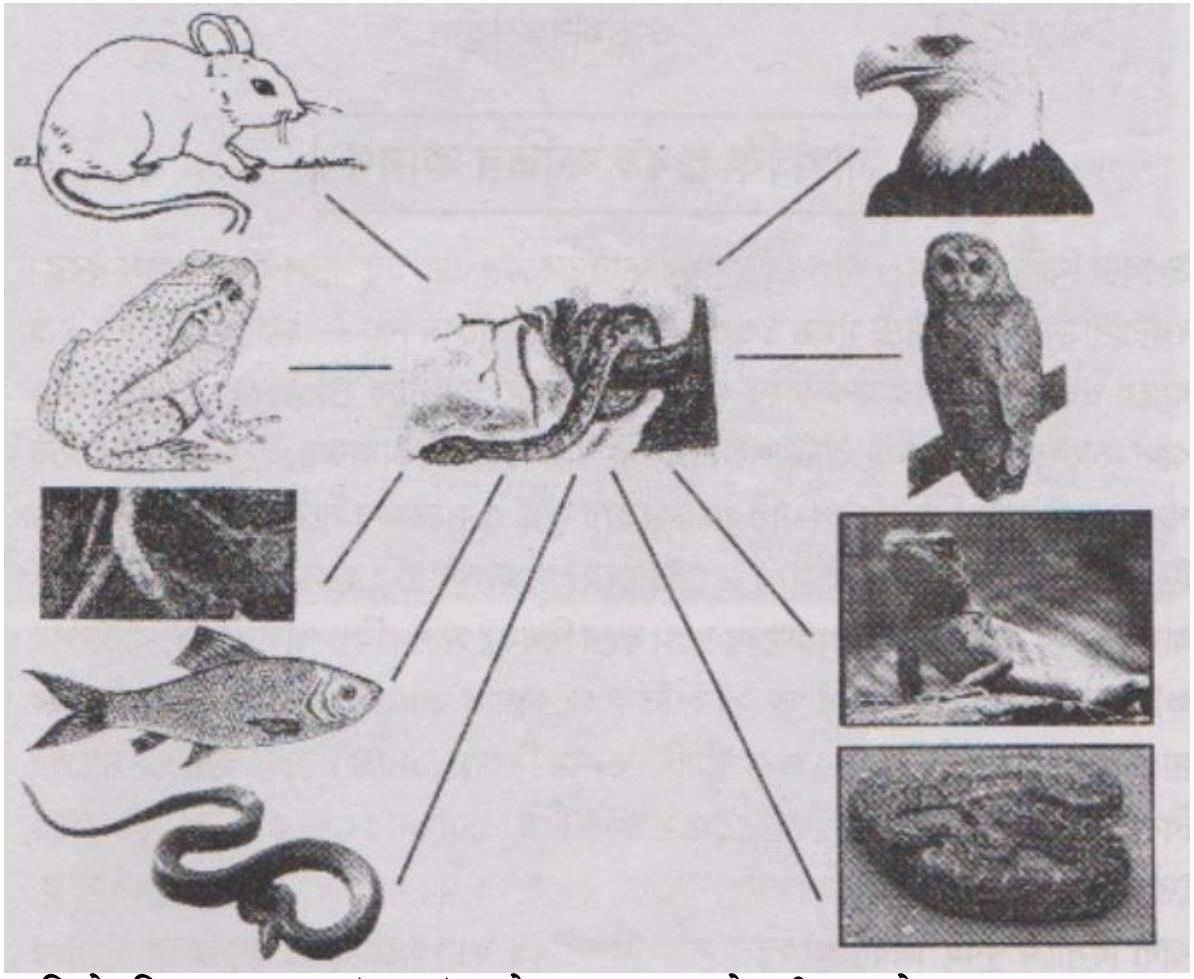

प्रकृति के नियमानुसार सांप, सांप को खाकर आपके जीवन को सुरक्षा प्रदान करता है। इसके अलावा चूहा सहित कीड़ों को खाकर आर्थिक लाभ देता है। इसलिए हमारे आसपास जितने अधिक सांप होंगे उतना ज्यादा हमें ही लाभ होगा।

सोचिए तो सांप हमारे करीबी और उपकारी मित्र हैं

सर्पदंश से कैसे बचें

मृत्यु पर अनुदान

मृत्यु हमेशा दुखदायी होता है। फिर भी अस्पताल में सांप के काटने से मृत्यु होने पर सहायता/ अनुदान मिलता है। मृत व्यक्ति के निकट संबंधियों को खंड विकास अधिकारी (BDO) के पास जाकर आवेदन करना होगा। यह आवेदन एक सप्ताह के भीतर करना होता है। इसके लिए पोस्टमार्टम रिपोर्ट जरूरी है ।

सांपों का संक्षिप्त वर्णन

स्थलीय विषधर

नाग (Naja kaouthia) - ये विषधर सांप है, जिसके फन होते हैं। फन के पीछे गोल (O) चिन्ह देखकर सहज ही इन्हें पहचाना जा सकता है। इनकी लंबाई 5-6 फीट होती है। ये जलाशयों/दलदली जमीन के पास रहना पसंद करते हैं। इनमें स्नायुविष पाया जाता है।

नागराज (Ophiophagus hannah) - यह प्रचंड विषधर सांप है, जिसका फन होता है। इसकी लंबाई 12-15 फीट होती है। यह विश्व का सबसे बड़ा फनयुक्त विषधर सांप है। घने जंगल ही इनके वासस्थान है। इनमें स्नायुविष (Neurotoxin) पाया जाता है।

करैत (Bungarus caeruleus) - ये विषधर सांप है, इनका फन नहीं होता है। इनकी लंबाई 3-4 फीट होती है। सिर अपेक्षाकृत छोटा, शरीर काला चमकदार या धूसर रंग का होता है। ये रात में निकलते हैं। बिस्तर में काटते हैं- जो एक अद्भुत घटनाक्रम है। इनमें स्नायुविष पाया जाता है।

सरीसृप वर्ग का एक ऐसा जीव, जिसकी नाख़ून नहीं होते, जिसकी दृष्टिशक्ति अत्यंत कमजोर है, जो केबल एकमात्र फैंफड़ा होने की कारन तेज़ गति से चल या दौड़ नहीं सकता, शरीर में घर्मग्रंथी न होने के कारण अतिरिक्त गर्मी या शीत में इसकी मौत भी हो जाती है, उन्नत मस्तिष्क न होने के कारण स्वभाविक बुद्धि से वंचित यह सोच भी नहीं पाता कि अगले पल क्या होगा? इतनी सारी कमियों के बावजूद यह जीव ने इस धरती पर छः से आठ करोड़ वर्षों से अपना अस्तित्व कायम कर रखा है। प्रकृति में इस अजीबोगरीब से प्राणी का नाम है – सांप।

इस जीव का नाम सुनते ही मन में श्रद्धामिश्रित भय, कौतुहल से लेकर मृत्यु की आशंका उत्पन्न हो जाती है। इसे देखने मात्र से जो पहली प्रतिक्रिया होती है कि – मारों ! मारडालो इसे ! विश्व के कई जगहों पर इन्हें पाला जाता है, इसके मांस को सुस्वादु भोजन के रूप में परोसा जाता है, खेल दिखाए जाते हैं। कई देशों में सांप शौर्य-वीरता का परिचायक है। सच पूंछे तो यह जीव हमारा छिपा हुआ दोस्त है। पाठ्य- पुस्तकों में सविस्तार वर्णन नहीं होने के कारण बचपन मे दादी – नानी से सुनी कहानियां ही इस जीव के विषय में हमारा मार्गदर्शन करती है और अक्सर हम मान लेते हैं कि साँप हमारा शत्रु ही है। सभी तक सटीक जानकारी पहुंचाने के उद्देश्य से 'जेब में सांप' लघु पुस्तिका का लोकार्पण करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। उम्मीद है आने वाले दिनों में सर्पदंश और असामयिक मृत्य के रोकथाम में यह पुस्तिका अग्रणी भूमिका निभाएगी।

युक्तिवादी सांस्कृतिक संस्था
कैनिंग, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल
www.jss-canning.org
हेल्पलाइन : 91-96359-95476
मूल्य : ₹ 35